अभ्यास पत्रक

पाठ – डायरी का एक पन्ना

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितिज चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा उसका बहता हुआ खून देखकर आँख मिंच जाती थी। इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थी और घोषणा पढ़ रही थी।"

1. पुलिस का व्यवहार प्रदर्शनकारियों के प्रति कैसा था?

उत्तर - .....

.....

2. क्षितिज चटर्जी के साथ क्या हुआ?

उत्तर - .....

.....

3. स्त्रियों ने पुलिस की हिंसा के बावजूद क्या कार्य किया?

उत्तर - .....

.....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** पाठ में स्वतंत्रता आंदोलन की महिला भागीदारी अत्यंत प्रभावशाली रूप में सामने आती है।
   कारण: स्त्रियाँ झंडा फहराने, सभा करने और जुलूस में अग्रणी भूमिका में थीं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

5. **कथन:** सुभाष बाबू को गिरफ्तार करने के बाद आंदोलन पूरी तरह रुक गया।
   कारण: लोगों को डर के कारण मैदान छोड़ना पड़ा।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. डायरी किस तिथि की घटनाओं का वर्णन करती है?
   (क) 15 अगस्त (ख) 26 जनवरी (ग) 2 अक्टूबर (घ) 23 मार्च

7. पाठ में मोनुमेंट के नीचे क्या होने वाला था?
   (क) राष्ट्रगीत गायन (ख) झंडा फहराना व स्वतंत्रता प्रतिज्ञा
   (ग) भाषण प्रतियोगिता (घ) खादी वितरण

8. सुभाष बाबू किस स्थान पर लाठियाँ खाकर भी 'वन्दे मातरम्' का उद्घोष करते रहे?
   (क) मोनुमेंट के सामने (ख) कौंसिल भवन में
   (ग) धर्मतल्ले के मोड़ पर (घ) चौरंगी पर

9. किस महिला नेता के नेतृत्व में स्त्रियाँ बहू बाजार तक पहुँचीं?
   (क) मदालसा बजाज (ख) जानकीदेवी (ग) प्रतिभा (घ) विमल प्रतिभा

10. गिरफ्तार की गई स्त्रियों की संख्या कितनी थी?
    (क) 67 (ख) 105 (ग) 160 (घ) 200

eGyanArchive

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. लेखक के अनुसार, कलकत्ता में पहले कैसा माहौल था और उस दिन क्या परिवर्तन आया?

उत्तर - .....

.....

.....

12. वृजलाल गोयनका की भागीदारी आंदोलन में कैसी रही?

उत्तर - .....

.....

.....

13. घायल व्यक्तियों की संख्या और उनके उपचार की क्या व्यवस्था की गई?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. पाठ "डायरी का एक पन्ना" स्वतंत्रता आंदोलन में जनसाधारण की सहभागिता और भावना का परिचायक कैसे है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "स्वतंत्रता आंदोलन केवल नेताओं तक सीमित नहीं था, यह जन-जन का आंदोलन था" – इस कथन की पुष्टि पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. पुलिस ने निर्दयता से प्रदर्शनकारियों पर लाठियाँ बरसाईं।
2. क्षितिज चटर्जी का सिर फट गया और खून बहने लगा।
3. स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहरा रही थीं और प्रतिज्ञा पढ़ रही थीं।
4. (क)
5. (घ)
6. (ख)
7. (ख)
8. (घ)
9. (घ)
10. (ख)
11. लेखक ने बताया कि पहले कलकत्ता में आंदोलन के लिए अधिक सक्रियता नहीं थी, लेकिन उस दिन का व्यापक आंदोलन इस सोच को बदल गया। लोगों में नई चेतना और आशा जगी।
12. वृजलाल गोयनका उत्साही कार्यकर्ता थे; उन्होंने मोनुमेंट की ओर दौड़कर भाग लिया, लाठियाँ खाईं, दो बार छोड़े गए और अंत में स्वयं दो सौ लोगों का जुलूस बनाकर गिरफ्तार हुए।
13. लगभग 160 लोग अस्पतालों में पहुँचे; डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे। कांग्रेस ऑफिस से घायलों के लिए गाड़ी मँगाई गई और जानकीदेवी भी वहाँ पहुँचीं।

14. इस पाठ में स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल बड़े नेताओं का नहीं, अपितु सामान्य जनता, स्त्रियों, विद्यार्थियों और युवाओं का भी था। मोनुमेंट पर झंडा फहराने से लेकर जुलूस, सभा और लाठीचार्ज – हर स्थान पर जनसाधारण की सहभागिता थी। स्त्रियों ने बिना डरे झंडा फहराया, युवा कार्यकर्ता घायल हुए, लोग अपनी-अपनी भूमिका निभा रहे थे। यह पाठ उस चेतना और बलिदान का दस्तावेज है जो स्वतंत्रता की नींव बना।

15. यह कथन पूर्णतः सत्य है कि स्वतंत्रता संग्राम केवल गांधी, नेहरू, सुभाष जैसे नेताओं तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक जनांदोलन था। "डायरी का एक पन्ना" पाठ इसकी सजीव झलक प्रस्तुत करता है, जहाँ पुरुषों के साथ स्त्रियाँ, विद्यार्थी, साधारण नागरिक सब सक्रिय हैं। जानकीदेवी, विमल प्रतिभा जैसी महिलाएँ जुलूस का नेतृत्व कर रही थीं। वृजलाल गोयनका जैसे युवकों ने कई बार लाठियाँ खाईं और फिर भी आंदोलन जारी रखा। पुलिस की बर्बरता, भीड़ का साहस, घायल कार्यकर्ताओं की सेवा – सब मिलकर दिखाते हैं कि यह केवल किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि पूरे समाज का आंदोलन था। यह पाठ हमें उस समय की वीरता, समर्पण और चेतना का साक्ष्य देता है, जो आज भी प्रेरणादायक है।